JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

धर्मांतरण, भारत राष्ट्र के लिए खतरा।

दिग्विजय विश्वकर्मा

पीएचडी शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

प्रस्तावना

ईसाइयों और मुसलमानों द्वारा हिंदुओं का धर्मांतरण किए जाने से इस राष्ट्र का राष्ट्रांतरण हो रहा है। इस बात को बड़ी मजबूती के साथ **स्वातंत्र्यवीर वीर सावरकर** जी ने तथ्यों और तर्कों के साथ रखी थी। जो बात उन्होंने सालों पहले कही थी वह आज हमें भारत में दिखाई दे रहा है जब धर्म के आधार पर जिले व राज्य बनाने की मांग की जा रही है। प्रस्तुत शोध लेख में हम इन तथ्य की विवेचना करेंगे।

प्रमुख शब्द

धर्मांतरण, राष्ट्रांतरण, भारत, अंदमान, हिंदू, मुसलमान, ईसाई, शुद्धिकरण।

परिकल्पना

धर्मांतरण, भारत राष्ट्र के लिए खतरा।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध लेख में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है तथा द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है।

धर्मांतरण से राष्ट्रांतरण का खतरा

स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर जिन्हें हम आमतौर पर वीर सावरकर के नाम से जानते है। निडर स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ ही समाज सुधारक, लेखक, कवि इतिहासकार, राजनीतिक

नेता और दार्शनिक थे। इन सभी क्षेत्रों में सावरकर ने अपने विचारों को बड़ी ही मजबूती के साथ व्यक्त किया है। स्वतंत्रता आंदोलन में वे एकमात्र विरले क्रांतिकारी थे जिन्हें दो आजीवन कारावास का दंड सुनाया गया, विश्व इतिहास में भी कही कोई ऐसा व्यक्ति देखने को नहीं मिलता है जिसे दो आजीवन कारावास का दंड दिया गया हो। स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ-साथ, सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में भी सावरकर के विचार अधिक धारदार प्रतीत होते हैं। हिन्दुओ में मौजूद जातिभेद हो या मुसलमानों या ईसाइयों द्वारा हिंदुओं का धर्मान्तरण हो इन पर सावरकर ने तीखा प्रहार किया और आजीवन जातिभेद मिटाने के लिए और हिंदुओ का धर्मान्तरण रोकने के लिए कार्य करते रहे। जातिभेद को और हिंदुओं के धर्मान्तरण को सावरकर राष्ट्र और हिन्दू समाज के लिए घातक मानते थे। सावरकर मानते थे कि यदि हिन्दू समाज और इस राष्ट्र को जीवित रहना है और इनका अस्तित्व बचाये रखना है तो हमें हिंदुओ के धर्मान्तरण को रोकना होगा क्योंकि धर्मान्तरण से राष्ट्रांतरण होता है इसमें कोई संदेह नहीं है। सावरकर कहते हैं कि "जब-जब धर्मांतरण होता है तब-तब वह राष्ट्रांतरण ही होता है इस एक सिद्धांत को हर राष्ट्रीय हितरत देशभक्त अवश्य गांठ बांध ले। जिस धर्म को हम कुछ मानते हैं उस धर्म से राष्ट्रीय परंपरा बंधी ही रहती है इसको हम हमेशा ध्यान रखें। धर्म का विश्वास नष्ट होते ही राम, कृष्ण, भरत, शिवाजी आदि की परंपरा से संबंध टूटता है। धर्मांतरण करने का अर्थ है मेरे जो पूर्वज थे वह मेरे पूर्वज ही नहीं ऐसा कहना। धर्मांतरण के कारण राष्ट्रीय इतिहास राष्ट्रीय विचार बदल जाते हैं यह परिवर्तन ही खुला राष्ट्रांतरण है आज का हिंदू जिन्ना कल के पाकिस्तान का निर्माता होता है और कुछ ही दिन पूर्व के हमारे अपने नागा ईसाई हो जाने के बाद खींचतीतान की मांग करने लगते हैं। ईसाई बहुसंख्य होते ही त्रावणकोर में हिंदू मंदिरों का विध्वंस शुरू हो जाता है यह सारे राष्ट्रांतरण कराने की प्रवृत्ति के बहुत खुले उदाहरण हैं।"1

हिंदू से ईसाई या मुसलमान बनने के बाद उस व्यक्ति की आस्था का केंद भारत न होकर मक्का या वेटिकन सिटी होती हैं। भारत भूमि उसके लिए पुण्यभूमि नहीं रह जाती। धर्मान्तरित होने के बाद वह अपनी पहचान मुसलमान या ईसाई के रूप में करता है और बाद में भारतीय के रूप में और यही से इस प्रकार राष्ट्र का राष्ट्रांतरण होता है। हिंदुओं को धर्मांतरित करने वाले मुसलमान व ईसाई ही है। भारत में इस्लाम के आने के बाद से ही हिंदुओं को धर्मान्तरित करने का कार्य चल रहा है। छल, बल, कपट, अत्याचार जैसे बन पड़े वैसे मुसलमान बनाओं। अंग्रेजों के आने के बाद ईसाई मिशनरियों को अपना धंधा चलाने के लिए एक बड़ा मैदान मिल गया और कम्पनी शासन में तो उन्हें राजकीय समर्थन भी मिलने लगा लेकिन 1857 के विद्रोह के बाद उन्होंने हिंसक व जबरदस्ती

धर्मांतरण के रास्ते को छोड़कर छल, कपट, लोभ, लालच और ऐसे जाल बिछाने शुरू किए जिससे हिंदुओं को उनके पूर्वजों की परंपराओं से दूर करके ईसाई बना सकें।

अंग्रेजों के आने के बाद सत्ता से दूर होने के बाद मुसलमानों ने हिंदुओं को धर्मान्तरित करने के लिए नए-नए हथकंडे अपनाये। 1911 में जब सावरकर को काला पानी भेज दिया गया तब उन्होंने सबसे पहले देखा और अनुभव किया कि धर्मांतरण राष्ट्र के लिए कितना बड़ा खतरा है और किन-किन तरीकों से मुसलमान हिंदुओं को उनके धर्म से विमुख कर, भ्रष्ट कर उन्हें इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर करते हैं। वीर सावरकर एक कैदी में रूप में वहाँ पहुँचते ही उन्होंने इसका पता लगाना शुरू किया। हमने सन 1911 में अंदमान में पांव रखा और उसके पश्चात कुछ ही महीनों में हमें यह ज्ञात हो गया कि कुछ हिंदू बंदी अंदमान में आने के पश्चात मुसलमान बने हैं और उन्होंने अपने नाम भी बदल डाले हैं हम उनकी खोज करने लगे कि यह कैसे हुआ।2

ब्रिटिश काल के कारागार में किस प्रकार से मुसलमानों द्वारा हिंदुओं का धर्मांतरण होता था इस विषय में सावरकर कहते हैं कि 14 वर्षों के अनुभवों और इस मसले पर नियंत्रण करने का अटूट प्रयास करते समय बिल्कुल बारीकी से पूरी जानकारी प्राप्त कर लेने के पश्चात हम यह स्पष्ट विधान करते हैं कि कारा संस्था (कारागार) की यह मस्जिद हिंदुओं को प्रतिवर्ष जितना धर्म भ्रष्ट करती है उतना दिल्ली अथवा मुंबई की जामा मस्जिद भी नहीं करती। अंडमान की बात छोड़िए, हिंदुस्तान के भी प्रायः सभी कारागारों में हिंदू बन्दियों को मुसलमान बन्दियों द्वारा और मुसलमान जमादार, हेड अफसर, वार्डन आदि बंदी अधिकारियों द्वारा मुसलमान बनाए जाने का कार्य होता रहता है।3

सावरकर कहते है कि "धर्मांध और पाप पारायण पठान बलूची आदि मुसलमान बन्दियों में से वार्डर आदि अधिकारी नियुक्त किए जाते थे वे लोग हिंदुओं को कठोर कामों में लगा कर, कठोर दंड का हौवा दिखा कर, अभियोग चलाकर उन्हें तंग करते और वे स्पष्ट रूप से यह कहते कि 'हम से पिंड छुड़ाना चाहते हो तो मुसलमान बन जाओ।4

हिंदुओं की जातिभेद की घातक प्रथा ने और संख्याबल के महत्व को नजरअंदाज करने की मानसिकता ने भी धर्मान्तरण को बढ़ावा दिया यहाँ तक कि कुछ हिन्दू ही हिंदुओं के धर्मान्तरण को सही ठहराने लगे। सावरकर ने हिंदुओं के इस आत्मघाती कदम की कठोर आलोचना की और कहा हमें इस विनाशकारी मानसिकता को शीघ्र छोड़ना होगा नहीं तो हमारा अस्तित्व नहीं बचेगा।

हिंदुओं में धर्मांतरण के अधिकतर वे लोग शिकार हैं जो कथित तौर पर निचली जाति या पतित जाति या नीच जाति के लोग हैं। (वीर सावरकर जन्म से ऊंची ऊंची जाति या नीची जाति जैसी

अवधारणा में विश्वास नहीं करते थे) जो लोग यह कहते हैं कि पतितों और अपराधियों व अपराधी प्रवृत्ति वाले लोगों को अपने धर्म में रखने से क्या लाभ? अच्छा है कि वे दूसरे धर्म में चले जाए हमारे धर्म की गंदगी साफ होगी। सावरकर ऐसा कुतर्क करने वालों से सवाल पूछते है कि फिर मुसलमान या ईसाई इन्हें अपने धर्म में शामिल कर क्यों अपने धर्म की पवित्रता को नष्ट करते हैं? गहराई से विचार करें तो आपने इस सामाजिक सत्य को पहचान कर स्मृति में रखा है कि व्यक्ति को अपने नाम से बल से जैसे-तैसे मुसलमानी अथवा ईसाई धर्म में घुसा कर रखा तो उसकी संतति बाल्यकाल से ही आपकी संस्कृति में ही पली-बढ़ी होने के कारण मन से पक्की इसाई अथवा मुसलमान होकर आप में से सुयोग्य वरिष्ठ एवं उपयुक्त नागरिकों की संख्या परिवर्धित करेगी क्योंकि ऐसा कोई नियम नहीं कि दुष्टों एवं मक्कारों की संतति भी मक्कार ही उपजती है। इंग्लैंड ने कनाडा और ऑस्ट्रेलिया दीपों में ऐसे ही निक्कमे और रद्दी लोग भेजें। आज इंग्लैंड के इन्हीं हत्यारे, चोर, डाकू अपराधियों ने उन दीपान्तरित पतितों के वंशजों ने कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में स्वतंत्र राष्ट्र एवं राज्य पर स्थापित किए हैं और इस तत्व पर गौर करते हुए कि चाहे वह हिंदू नीच हो चोर उचक्का हो, मक्कार हो, अज्ञ हो परंतु मात्र हिंदू होने से उसे परधर्म में जाने नहीं दिया जाए और यदि वह चला भी गया तो उसे पुनः शुद्धिकरण के साथ हिंदू समाज में वापस लाया जाए।5

हिन्दू समाज और राष्ट्र के लिए घातक धर्मान्तरण को रोकने के अपने अभियान के तहत 11 दिसंबर 1943 के दिन पुणे के नारद मंदिर में भाषण देते हुए वीर सावरकर जी ने कहा था कि कथा वाचकों को समाज में हमेशा ही बड़ा सम्मान दिया जाता यह कथा वाचकों की संस्था धर्म के मूल की रक्षा करें। केवल शाखा या पत्तियों की ऊपर-ऊपर से सुरक्षा करने से बात नहीं बनेगी आज ईसाई मिशनरियों का हमारे धर्म पर खुला आक्रमण है कथा वाचकों को चाहिए कि वे गांव-गांव में जाकर ईसाई मिशनरियों के हथकंडे को रोके। धर्मांतरण के पीछे-पीछे राष्ट्रांतरण होता है इसमे संदेह नहीं है। राजनीति के लोग इन इसाई मिशनरियों की उचित व्यवस्था करेंगे ही परंतु पहले कथावाचक यह काम अपने हाथ में ले इस कार्य के लिए समाज में उनकी जो प्रतिष्ठा है उसका प्रयोग करें। शंकराचार्य को भी चाहिए कि वे जागृत होकर मिशनरियों के विरुद्ध आंदोलन खड़ा कर उनका कार्य बंद करवाएं।6

इसके अलावा धर्मांतरण की काट के लिए और धर्मान्तरित हुए अपने धर्मबन्धुओं को पुनः हिन्दू धर्म में वापस लाने के लिए सावरकर ने शुद्धि आंदोलन चलाया। 23 अगस्त 1955 को मुंबई में आयोजित शुद्धि समारोह के अवसर पर व्याख्यान देते हुए हिंदू संगठन वीर सावरकर ने कहा आज के इस समारोह में मैं उपस्थित हूँ इसका कारण यह है कि मुझे शुद्धि कार्य की महत्ता सबसे अधिक लगती है। इसका अर्थ मात्र इतना ही नहीं कि 5-10 लोग हिंदू धर्म में आए। हिंदू समाज के बेसुध रहने से

अपने अज्ञान से एवं भ्रम पूर्ण नीतियों के कारण असंख्य लोग पर धर्म में चले गए उस बेशुद्ध अवस्था से हम अब उबर रहे हैं। यह अपने समाज की और राष्ट्र की शुद्धि है।□ □आज यह बेसुधी कम हो रही है और यह बात सच है पर समय पर ही हम जीत गए होते और शुद्धि चलाते तो कश्मीर का या गोवा का प्रश्न उत्पन्न ही ना हुआ होता कश्मीर में धर्म छेद होकर मुसलमान हुए पूर्व हिंदू हमें फिर से हिंदू बना लो ऐसा महाराजा हरि सिंह को निवेदन करते रहे महाराजा अनुकूल थे पर हिंदू समाज ने अपने दरवाजे बंद कर लिए और वहां मुसलमानों का नया प्रश्न उपस्थित हो गया। गोवा में भी हमारी दुर्बलता इन्हीं लोगों को इस आई बनाए रहे और आज वहां के पुर्तगाली शासक स्थाई राष्ट्र की बातें कह रहे हैं आज गोवा में सारे हिंदू ही होते तो साला जार वहां शासन कर ही नहीं सकता था शुद्धि का प्रश्न इस तरह राष्ट्र के जीवन से जुड़ा है।□7

सावरकर ने जिस राष्ट्रांतरण की बात कही थी क्या वह विभाजन के बाद भी दिखाई देती है? हमे इन बात को भी समझना चाहिए कि आज भी हिंदुओं का मुसलमान और ईसाई धर्मान्तरण कर रहे हैं और विभाजनकारी मानसिकता भारत मे जगह-जगह पनप रही हैं। सावरकर का संख्याबल के बारे में जो कहना था वो आज भारत मे सौ फीसदी सही साबित हो रहा है। दो उदाहरण देखिये, ये उदाहरण 2021 के ही है। मद्रास उच्च न्यायालय के समक्ष पेरंबलूर जिले के कड़तूर गांव का विवाद पहुंचा, जिसमें हिंदू पक्ष ने वर्षों से निकाली जा रही रथ यात्राओं के मार्ग को मुस्लिम पक्ष के दबाव में सत्र न्यायालय द्वारा सीमित कर दिए जाने के आदेश को चुनौती दी थी। यह बात ध्यान देने योग्य है कि लगभग सभी प्राचीन मंदिरों में परंपरा के अनुसार वर्ष में एक बार मंदिर के मुख्य विग्रह का धातु स्वरूप आसपास के क्षेत्र में परिक्रमा के लिए ले जाया जाता है। कड़तूर के चार प्रमुख मंदिरों की रथ यात्रा भी 2011 तक निर्विघ्न रूप से निकलती रही, लेकिन 2012 से जमात ने इसका विरोध करना शुरू कर दिया। मुस्लिम पक्ष का कहना था कि चूंकि गांव में मुस्लिम आबादी अधिक है और इस्लामिक मान्यता में मूर्ति पूजा शिर्क यानी पाप है इसलिए रथयात्राओं और अन्य हिंदू उत्सवों पर मुस्लिम इलाकों में रोक लगाई जाए। यह दलील घोर असहिष्णुता के साथ-साथ दुस्साहस की मिसाल थी। जमात को कड़ी फटकार लगाते हुए मद्रास उच्च न्यायालय के जस्टिस कृपाकरन और जस्टिस वेलमुरुगन की पीठ ने पूछा कि समूह धार्मिक हो सकते हैं और व्यक्ति सांप्रदायिक, परंतु क्या सड़कें भी मजहबी हो सकती हैं? हिंदू पक्ष को पूर्व की भांति गांव के सभी मार्गों से यात्रा निकालने की अनुमति देते हुए पीठ ने जमात को याद दिलाया कि यदि उसका तर्क मान लिया जाए तो हिंदू बहुल भारत के अधिकांश हिस्सों में न तो कोई मुस्लिम आयोजन हो सकता है और न ही किसी जुलूस को निकालने की अनुमति दी जा सकती है। यह अत्यंत दुख का विषय

है कि हिंदुओं को भारत में बहुसंख्यक होते हुए भी पूजा जैसे मूल अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय की शरण में जाना पड़ रहा है। इस प्रकरण का चिंताजनक पहलू यह भी है कि जमात ने अपने कट्टर, मजहबी दुराग्रहों को एक पंथनिरपेक्ष देश की न्यायपालिका में तर्क के रूप में पेश करने का दुस्साहस किया। हालांकि इस धृष्टता की उत्पत्ति अचानक नहीं हुई। यह अपने शरिया निजाम को गैर मुस्लिमों पर थोपने की प्रवृत्ति और बढ़ते सलाफी-वहाबी प्रभाव के साथ-साथ शासन की लगातार ढिलाई का परिणाम है। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि मुसलमान हिंदुओं का धर्मांतरण किस मानसिकता से कर रहे हैं। हिन्दू अभी इस देश मे बहुसंख्यक है इसलिए कोर्ट का फैसला भी लागू करवाने की समस्या नहीं है लेकिन यह आपको भी पता है कि इस देश में कुछ ऐसे इलाके बन गए है जहाँ कोर्ट और पुलिस भी अपना फैसला लागू करवाने के लिए मुल्ला-मौलवियों के सामने हाथ बांधे खड़े रहते है क्योंकि वो भी इस्लामिक धर्मान्धता को जानते है।'8

केरल में मलप्पुरम में मुसलमानों की अधिक आबादी होने के बाद उसे एक अलग जिला बनाने की मांग चरमपंथी इस्लामिक संगठनों द्वारा की जा रही है। इतना ही नहीं मलप्पुरम और उसके साथ के 2-4 जिलों को मिलाकर कुछ तमिलनाडु के हिस्से को मिलाकर एक अलग राज्य बनाने की मांग की जा रही है उसके पीछे चरमपंथी इस्लामिक संगठनों का तर्क है कि चूंकि इन इलाकों में हमारी आबादी आधे से ज्यादा है अर्थात हम बहुसंख्यक है इसलिए हमें अलग राज्य मिलना चाहिए, यह वही जिन्ना की मानसिकता है जिसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है। अभी हाल ही में पंजाब में मनेरकोटला को अलग जिला बनाने की घोषणा की गई जहाँ मुस्लिम आबादी 40% हो गई है।'9

वीर सावरकर का कहा गया हिंदुओं धर्मान्तरण और उनकी संख्याबल घटने के जिन खतरों को कह रहे थे आज उनका एक-एक कथन सत्य हो रहा है। दुर्भाग्यवश, वीर सावरकर को इस देश मे गलत तरीके से प्रसारित किया गया, जो लोग सावरकर के राजनीतिक विचारो से असहमत थे वे इस धारणा को बढ़ावा देते हैं कि वह एक अस्पष्ट तथा प्रतिक्रियात्मक कट्टरपंथी थे। आज आवश्यकता इस राष्ट्र को बचाने की है और यह तभी संभव है जब देश में मुसलमानों और ईसाईयों द्वारा हिंदुओं के धर्मान्तरण पर रोक लगाई जाए।

संदर्भ सूची/स्त्रोत:-

1. सामाजिक भाषण, सावरकर समग्र, खंड-7, पृष्ठ-360.

2. उत्तरार्ध, प्रकरण-2 अंदमान में शुद्धि, सावरकर समग्र, खंड-2, पृष्ठ-262.

3. उत्तरार्ध, प्रकरण-2 अंदमान में शुद्धि, सावरकर समग्र, खंड-2, पृष्ठ-263.

4. उत्तरार्ध, प्रकरण-2 भ्रष्टीकरण की प्रथम विधि, सावरकर समग्र, खंड-2, पृष्ठ-266.

5. उत्तरार्ध, प्रकरण-2 पतितोद्धार की विशेष आवश्यकता, सावरकर समग्र, खंड-2, पृष्ठ-269.

6. सामाजिक भाषण, सावरकर समग्र, खंड-7, पृष्ठ-357.

7. सामाजिक भाषण, सावरकर समग्र, खंड-7, पृष्ठ-371.

8.https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-madras-high-court-order-against-religious-persecutions-administration-should-stop-religious-persecutions-21665355.html

9. Aapka Akhabar, https://youtu.be/SW-ioOC9B1w